मंजूर एहतेशाम के तमाशा कहानी संग्रह में संवेदना के नए रूप

डॉ. अनु कुमारी,

विवेकानन्द, कॉलेज दिल्ली विश्वविद्यालय

शोध सारांश

मंजूर एहतेशाम की कहानियाँ मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज के जीवन उनकी परेशानियों और संवेदनाओं को प्रस्तुत करती हैं। इन कहानियों में कहीं आर्थिक दबाब के कारण संबंधों से समझौता करते लोग हैं तो कही धर्म की नई तस्वीर सामने आती हैं। कहीं बेईमानी की जिंदगी जीते हुए भी मानवीयता की अनुभूति रखते पात्र हैं तो कहीं पिता पुत्री के संबंधों के बीच तनाव का कारण तलाक दिखाई देता हैं। कहानियों में नए जीवन मूल्यों का निर्माण होता दिखाई देता हैं।

बीज शब्द – *मध्यवर्ग, सम्बन्ध, मूल्य, नई परिभाषा,समझौता मानवीयता*

आलेख

स्वातंत्र्योतर कहानीकारों में मंज़ूर एहतेशाम एक ऐसे लेखक हैं जो मध्यवर्ग की परेशानियों को समझने के साथ–साथ उन्हें अपनी कहानियों में खूबसूरती से उतारने का प्रयास करते हैं। विशेष सम्प्रदाय से होने पर भी धार्मिक कट्टरता, जातीय संकीर्णता से दूर रहने वाले यह रचनाकार इंसान के अलावा किसी खुदा में यकीन नहीं करते। वे मानते हैं कि धर्म एक धंधा है जैसे जूता बनाना और बाजार में सब अपने माल को ज्यादा से ज्यादा बेचकर धंधा को और अधिक आगे बढ़ाना चाहते हैं। मुनाफा कमाना ही उनका मकसद है। धर्म के ठेकेदार भी ऐसा ही करते हैं। इसी तरह के ज्वलंत विचारों के रचनाकार मंजूर जी का कथा संग्रह तमाशा कई नए मूल्यों को हमारे सामने रखता है।

मध्यवर्गीय मुस्लिम समाज के जीवन को यथार्थ और मार्मिक रूप में चित्रित करने का प्रयास इस संग्रह की कहानियों में हुआ है। उच्चवर्ग तक पहुंचने की चाहत और निम्न वर्ग से अलग होने की कोशिश के बीच यह वर्ग पिसता रहता है और इसी बीच स्वयं को तलाशता है। हालांकि यह सिर्फ मध्यवर्गीय मुस्लिम परिवार की कहानी ही नहीं हैं बल्कि यह उस जाति–धर्म के व्यक्ति की कहानी भी हो सकती है जो धर्म –सम्प्रदाय, समाज की बेड़ियों से बँधे है और उन्हें तोड़ना चाहता है। ऐसी ही कितनी नई संवेदनाएँ इन कहानियों में मिलती हैं।

संग्रह की पहली कहानी का पात्र बशीर खाँ खुद को खुदा का वफादार मानता है और बकरीद में कुर्बानी के लिए शाहू नामक बकरे को पालना शुरू करता है। पालने की प्रक्रिया में ही बशीर खाँ शाहू से अपने पुत्र की तरह प्रेम करने लगता है उसकी कुर्बानी के नाम पर ही बशीर घबरा जाता है उनके दिल में बार–बार यह ख़याल पक्का होता गया था कि अल्लाह उन्हें माफ करेगा– लेकिन वह शाहू को किसी भी कीमत पर कुर्बान नहीं कर पाएंगे– नहीं करेंगे।

बशीर खाँ को महसूस होता है कि इसी लगाव की सज़ा के लिए कुर्बानी से एक सप्ताह पहले ही शाहू की मौत हो गई।

बशीर खाँ के मन में धर्म भीरुता है पर वे एक इन्सान का दिल भी रखते हैं उस दिल में प्रेम है, हमदर्दी है इसी हमदर्दी के कारण वे शाहू की मौत की बात भी बरदाश्त नहीं कर पाते और धार्मिक कट्टरता को तोड़ने की कोशिश करते हैं कि––

वे शाहू की कुर्बानी नहीं देंगे1 परंतु धर्म की जकड़न इतनी मजबूत होती है कि उससे बाहर निकलना आसान नहीं और बशीर भी बाहर निकलते–निकलते फिर इस भ्रम से घिर जाते हैं कि कुर्बानी से मुकरने के कारण ही शाहू की मौत हो गई खुदा ने अपनी नाराज़गी इस रूप में दिखाई। यहाँ बशीर खाँ नए फैसले लेना तो चाहते हैं पर फिर पुराने मूल्यों में ही घिर जाते हैं।

'घेरा' कहानी शब्बो नाम की स्त्री की कहानी है जिसकी माँ उसके पिता से तलाक लिए बगैर, बिना शादी के कुँवर साहब के साथ रह रही थी। उसके पिता ने शाही खानदान की लड़की बिया से शादी कर ली थी। नई माँ बिया ने शब्बो को उसकी माँ के जैसा न बनने से रोकने के लिए उसका लड़कों से बात करना बन्द कर दिया उसे हमेशा यह समझाया जाता कि उसे अपने अन्दर की औरत की हिफाज़त करनी चाहिए अन्यथा कोई भी मर्द एक रात के बाद ही उसे घर से निकाल देगा। धीरे धीरे शब्बो को पुरुषों से नफरत हो गई और वह अपने से तीन गुनी अधिक उम्र के रहीम साब से शादी कर आदमी के सुख को पाने के लिए तड़पती रही। रहीम साब से संतुष्ट न हो पाने के कारण कई मर्दों के साथ शब्बो के संबंध बने परंतु वह रहीम साब की कोठी छोड़कर किसी भी पुरूष के साथ भाग पाने में समर्थ नहीं हो पाई क्योंकि जब तक शादी के घेरे में बंधी है। अन्य पुरूषों से सम्बद्ध होते हुए भी आज़ाद है इस घेरे को तोड़ते ही वह दुनिया की नजरों के बंधन में फँस जाएगी। शब्बो के लिए विवाह सिर्फ शानौ शौकत पाने का साधन है। वह विवाह के परम्परागत मूल्यों को नहीं स्वीकारती उसके दिमाग में शादी का निर्णय लेते हुए यह काफी साफ था कि वह क्या खोने जा रही है और क्या पाने जा रही है।

यह कहानी संबंधों में आती गिरावट की ओर संकेत करती है। प्रेम के नाम पर स्वयं को छलने का प्रयास करते व्यक्तित्व इस संग्रह की कहानियों में साकार हुए हैं। प्रेम एक महान भाव है परंतु पूर्णतः भावात्मक भी नहीं। आज इसे भाव और शरीर के मिले–जुले धरातल पर स्वीकार किया जा रहा है।

शब्बो और उसकी माँ सामाजिक सम्बन्धों को अपने मन–मुताबिक रूप देने की कोशिश करते हैं। ये असन्तुष्ट और अभाव ग्रस्त लोग सम्बन्धों को नया रूप देने के प्रयास में सामाजिक ढाँचे को ही बदल देते हैं।

'सत्यवादी हरिश्चन्द्र' कहानी में बेईमानी और रिश्वतखोरी करने वाले को तवाइफ के समान माना गया है। बेईमान लोगों की दावतों का हिस्सा सिर्फ उन्हीं के जैसे भ्रष्ट लोग ही होते हैं। यही बेईमान व्यवस्था का रूप है, जहाँ सिर्फ वही मित्र हैं, जिन्हें दूसरे किसी से मतलब की उम्मीद होती है। व्यवस्था के अन्दर फैल रहे भ्रष्टाचार को यह कहानी बेनकाब करने का प्रयास करती हैं। स. हरिशचन्द्र अपनी बेईमानी की कमाई का राज बताते हैं– 'कुछ नहीं सर– कड़ी मेहनत, ईमानदारी और सच्चाई।[2] स. हरिश्चन्द्र नए जमाने के हरिश्चन्द्र का प्रतिरूप हैं।

अँधेरें में' कहानी व्यवस्था की बेईमानी से तंग, परेशान, बेचैन मनुष्य की कहानी है। परिवार की जरूरतों को पूरा करने के लिए हर सम्भव प्रयास करता है। परन्तु असपफल रहता है असफलता की निराशा में वह आन्दोलन से जुड़ता है और कहीं अन्धेरे में विलीन हो जाता है। ऐसा पलायन कितने ही व्यक्ति कर जाते हैं जो

व्यवस्था के साथ फिट नहीं बैठ पाते । आम जन की पीड़ा और कुछ न कर पाने की कुंठा उन्हें अँधेरे में खड़ा कर देती है।

'छोटी–छोटी चीजें' कहानी में संजू अपने परिवार की भौतिक आवश्यकताओं को पूरा नहीं कर पाता। उधार लेकर भी वह अपने परिवार को खुश नहीं कर पाया और ये खुशियाँ उन्हें मिलती हैं–

'पत्नी के भाई, रिश्तेदार और पड़ोसियों से' नायक का यह कथन एक नए सम्बन्ध की तरफ इशारा करता है–

'दो दिन बीबी के भाई घर आते हैं, मशीन दिला जाते हैं दिन भर अकेले उसका दिल घबराता है, अगर घर में रेडियो! मैं सोचता रहता हूँ। मेरा छोटा कज़न घर आता है और बहुत इत्मिनान से अपना ट्रांजिस्टर उसे भेंट कर जाता है। हमारे यहाँ बिजली की इस्तरी नहीं है उसे कोयले दहकाने में उलझन होती है किसी पड़ोसी की मेहरबानी से वह रोज़ बिजली की इस्तरी इस्तेमाल करती है।'[3]

परिवार में खुशियों के मायने अब रेडियो, टेलीविज़न से तय होते हैं। वह तमाम खुशियाँ जिन्हें एक व्यक्ति अपने परिवार के लिए लाकर खुश होता था उन सभी पर अब सिर्फ पैसा अपना हक जमा चुका था और अपने घर से अलग संजू आर्थिक अभाव से संत्रस्त, टूटा हुआ मनुष्य बनकर रह जाता है।

आधुनिक समाज में बढ़ती उपभोक्तावादी प्रवृत्ति और कम होते मानवीय संबंधों की यह कहानी जीवन में आ रही कमियों को दर्शाती है। आज सभी रिश्ते, खरीद फरोख्त की वस्तु बन गए हैं। पति–पत्नी, माँ–बाप, भाई–बहन, सभी रिश्ते तभी तक बरकरार हैं, जब तक एक–दूसरे की आवश्यकताओं की पूर्ति करते रहें। जैसे जरूरतों की पूर्ति में कमी आती है रिश्तों के बन्धन ढीले पड़ते जाते हैं। पैसे का अभाव रिश्ते को खत्म करने का माध्यम बन गया है।

आर्थिक अभाव की इस समस्या से समाज का कोई पक्ष अछूता नहीं है। धर्म, राजनीति, साहित्य सभी के मूल में यही धन है। आज हर चीज बाजार से प्रभावित है। यहाँ तक कि लेखक की रचनाओं को ख्याति मिलती है तो वह भी पैसे से ही।

जब इलाज–मालजे तक के लिए चंदे की नौबत आ जाए तो आदमी लिखना, लिखाना छोड़कर कोई दूसरा, फायदे का काम, क्यों नहीं शुरू कर दे? कोई ऐसा काम जिससे इतना तो हासिल हो सके जो रोज़ की ज़िन्दगी बिताने के लिए जरूरी हो।[4]

'रमज़ान में मौत' कहानी ठण्डे संबंधों या कहें सम्बन्धहीनता की कहानी है। असद मियाँ रमजान के दिनों में अपनी बीमारी से लड़ रहे है और परिवार वालों को चिन्ता है कि ईद कैसे मनाई जाए। पैथिडीन लेकर जीने वाले असद मियाँ की हालत बदसे बदतर होती जाती है। रिश्तेदार डॉक्टर से दिखाने की बजाय उन्हें ऐसे ही छोड़ देते हैं उनकी बीबी भी इस बात से परेशान हैं कि जिस चादर पर असद मियाँ लेटे हैं वह गन्दी है और ईद पर कोई सफेद चादर तक नहीं। सबके लिए असद मियाँ की बीमारी...

'तमाशाबाज़ी है। निरी एक्टिंग! और सारे मर्जों की एक दवा है– पैथिडीन!'5

रिश्तों के खालीपन को झेल रहे असद मियाँ का यह खालीपन वर्तमान मनुष्य के जीवन में भी पसरा हुआ है, बिखराव, टूट आज के व्यक्ति में निरंतर बढ़ता जा रहा है और वह यथा स्थिति से संघर्ष करने की बजाय उनसे पलायन करता जा रहा है।

'जश्न' कहानी ज़िन्दगी की एकरसता से ऊबे हुए लोगों की कहानी है। ये लोग रोज एक जैसा जीवन जीते हुए इतने थक चुके हैं कि मौत जैसी हृदय द्रावक घटना भी आनन्द का अहसास कराती है और एकरसता को तोड़ सरसता लाती है। मृत्यु, जनाजा, अंतिम संस्कार ये सभी घटनाएँ रोज़मर्रा की दिनचर्या में बदलाव लाने का प्रयास है। पात्रों के नाम यहाँ महत्वपूर्ण नहीं ये य, र, ल,

व कुछ भी हो सकते हैं जीवन के सौन्दर्य की तरह नामों का सौन्दर्य भी समाप्त हो चुका है।

'खेल' कहानी नौकर की मृत्यु की घटना से शुरू होती है। जनाजे में जाने वालों के लिए अपना नफा–नुकसान देखना पहली अनिवार्यता थी। दुख सुख की अनुभूति अब स्वाभाविक नहीं रही यह भी प्रयास से पैदा की जाने वाली भावनाएँ हो गई।

'फिल्मी पोस्टर के हवाले से' कहानी जीवन को चुनौती मानने वाले पुरुष की कहानी है जो दूसरो को आत्महत्या करने से बचाता है परन्तु एक दिन खुद आत्महत्या कर लेता है।

'तलाफी' कहानी साहित्य जगत के उन लेखकों पर व्यंग्य है जो आवश्यकता और नाम दोनों में आवश्यकता को चुनते हैं। इसमें वर्तमान लेखक की वास्तविकता समझाते हुए उनकी पारिवारिक जीवन की दिक्कतों की ओर संकेत किया गया है। लेखक को आत्माभिव्यक्ति का मेहनताना क्या मिलता है? कम से कम इतना तो मिलना ही चाहिए जिससे मूलभूत आवश्यकताएँ पूरी हो जाएँ। नामी–गिनामी लेखक भी अपने घर की जरूरतें कैसे पूरी कर पाते होंगे?

आदर्श और यथार्थ के मध्य द्वन्द्व इस कहानी में दिखाई देता है अन्त में लेखक पलायन कर जाता है। वह सोचता है पत्नी के पास जरूरत की चीजें भी नहीं है ऐसे में लिखना भी जरूरी है, सामान भी जरूरी है या सिर्फ सामान ही जरूरी है यह निर्णय कर पाना मुश्किल लगता है। आज के लेखकों के सामने यह समस्या हर वक्त खड़ी रहती है वे लेखक के आदर्श को भी निभाना चाहते हैं पर परिवार का यथार्थ उन्हें अपने रास्ते से भटकाता है।

'तमाशा' कहानी सकीना आपा की जिन्दगी की दास्तान है। सकीना पाँच सन्तानों की माँ और पति द्वारा छोड़ी गई स्त्री है। पति का सुख उन्हें खुद तो नहीं मिला परन्तु अपनी चारों लड़कियों की शादी कर वे मानती हैं कि उनका काम पूरा हुआ। हर लड़की किसी न किसी रूप में विवाह के बाद दुःख ही पाती है। सकीना एक ऐसा चरित्र है जो परम्पराओं की घुटन में जीना चाहती है उससे बाहर नहीं निकलना चाहती। रीति–रिवाजों की रूढ़ियों को न मानते हुए भी वे उसी के अनुसार चलती जाती हैं और ज़िन्दगी को एक तमाशे की तरह देखती हैं।

इस प्रकार मंज़ूर एहतेशाम की कहानियाँ कथा–साहित्य को नए सामाजिक आधार देने का प्रयास करती हैं। उनकी कहानियों में जो यथार्थ दिखाई देता है, वह मात्र एक व्यक्ति या वर्ग विशेष का नही बल्कि यह किसी भी समाज के जीवन को प्रस्तुत करता हैं लेखक किसी विवाद में न फँसते हुए अपनी मौलिक दृष्टि से युगीन सन्दर्भों के हर पहलू को देखता है और समाज को दिशा देने का काम करता है। ये कहानियाँ नवीन परिवेश में बदलती हुई मनः स्थिति, जीवन–मूल्यों में आए परिवर्तनों व समाज की विडम्बनाओं और समस्याओं को रेखांकित करती है। अन्ततः मंज़ूर जी की कहानियाँ समसामयिक युगीन परिवेश के विस्तृत सन्दर्भों को उजागर करती हैं और नए मूल्यों को तलाशती हैं।

संदर्भ

1. बशीर खां –मालिक मॉडर्न केनिंग आर्ट, तमाशा और अन्य कहानियाँ – मंजूर एहतेशाम राजकमल प्रकाशन ,नयी दिल्ली पृष्ठ–23
2. सत्यवादी हरिश्चन्द्र, वही पृष्ठ –40
3. छोटी छोटी चीजें, –वही पृष्ठ –70
4. तलाफी –वही पृष्ठ 50
5. रमजान में मौत – वही पृष्ठ–78

Copyright © 2017 *Dr. Anu Kumari*. This is an open access refereed article distributed under the Creative Common Attribution License which permits unrestricted use, distribution and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited.